Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 01 May 2018 02:01

:□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ :□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□,□□ □□□□ □□□□□□□ :□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ :□□□□□□□-□□□□□ □□ :

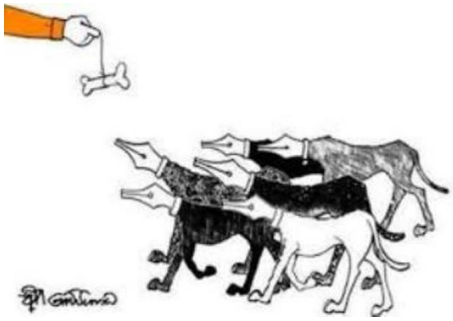

□□□□□ □□□□□

□□□□ :बाकी बात तो बाद में होगी, सबसे पहले तो उन झंडाबरदारों की जमात से कुछ सवाल पूछना लाजमी और बेहद जरूरी है जो खुद को समाज का सबसे जमि□मेदार कहते-कहलाने में दर्प-घमंड पाले घूमा करते हैं□ यह न इधर के होते हैं, और न ही उधर के□ मगर खुद को दोनों ही ओर के लोगों में शुमार होने के दावे करते हैं□ यह लोग खुद को पीड़ति-उत्□पीड़त सर्वहारा श्रमकि समाज का नुमाइंदा और उनकी आवाज उठाने वाला होने का दावा करते हैं□ जबकि दूसरी ओर आसन लगाये और पूंजी पर कबजि लोगों की जी-हुजूरी करते हैं□ मक्सद यह कि कैसे भी हो, उनका पेट भरता रहे□ यह सरकारी रक्म हड़पने की जुगत भड़िाते रहते हैं□ मगर कभी भी श्रमकि वर्ग के बारे में कोई भी आवाज नहीं उठाते□

जी हां, सही सोचा आपने□ मेरा यह सवाल उपत्रकार-बरिादरी से जुड़े अधकिांश लोगों से ही है□ ऐसा नहीं कि सारे पत्रकार घटयि हैं और पत्रकारति को क्लंकति कर रहे हैं□ यह कहना गलत होगा□ लेकनि यह भी सच है कि इस बरिादरी के अधकिांश लोगों के बारे में आम आदमी की राय बेहद गम्□भीर है□ कोई तुम्□हें दलाल कहता है, तो कोई तुम्□हें खबरंडी पुकारता है□ कोई भांड़ कहता है, तो कोई घुटयि बचिौलयि□ जो चुल्□लू भर दारू में अपनी आत्□मा बेचने पर आमादा होता है□ लखनऊ हाईकोर्ट के अधविक्□ता जी□ल यादव ने आज लखिा है कि, "भारतीय मीडयि गूँगी , अन्धी और बहरी हो गयी है□ इनकी आत्मा तक बकि गयी है□ देश की दुर्दशा पर ऐसी चुप्पी!"

तो ऐसा है पत्रकार जी, तुम बताओ तो कि, तुम श्रमकि दविस मनाने वाली नौटंकी काहे करते हो? खुद के इजारेदारों के खलिाफ आवाज उठाते हो, मगर कभी भी तुमने अपने समाचार-संस्□थान के मालकिों की करतूतों पर कोई आवाज ? तुम बताओ न कि ओवर-टाइम और बोनस जैसे शब्□द अब तुम्□हारी आवाजों से गायब कैसे हो गये? कसिी भी संस्□थान में चल रहे उत्□पीड़न पर तुम अपनी आवाज उठाने के बजाय सीधे सम्□पादक के तलवे चाटने पर ही क्□यों आमादा रहे हो? मजीठयि आयोग ने तो तुम्□हारे लि□ सारे रास्□ते खोल दयि थे, लेकनि तुम ही लपककर मालकिों के पक्ष में चट्ठी-पत्री लखिना शुरू कर देते हो, आखरि काहे? तुम्□हारे सारे नेता क्□यों क्लंकति चेहरा काहे रखे घूमा करते हैं? झूठे नारे, झूठे दावे□ कसिकी रक्म से तुम देश-वदिेश घूमा करते हो? कौन होता है तुम्□हारा फाइनेंसर? और उसका मक्सद क्□या होता है ऐसे आर्थकि सहयोग देने का? अपनी मर्दानगी दखिाने के लि□ खुद को श्रमकि कहलाते हो? जबकि हो पक्□के नपुंसक□ कापुरूष□ खैर, जल्□दी ही तुम लोगों पर तो अब □क श्रंखलाबद्ध आलेख रपिोर्ट तैयार कर ही रहा हूं□

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 01 May 2018 02:01

प्रतीक्षा करना□

तुम ठेकेपर काम करते हो, यानी ठेकेदार हो□ है न? वज्ञिापन का काम करते हो, इसलि□ वज्ञिापन प्रतनिधि हो□ है न? इधर की बात उधर लगाते हो, इसलि□ चुगलखोर हो□ हो न? इधर की बात उधर लगाते हो, इसलि□ चुगलखोर हो□ हो न? गड़बड़ काम कराने का जमि□मा लेते हो, इसलि□ दलाल हो□ हो न? आम आदमी से पैसा उगाहते हो, तो ब्रजेश सहि और मुन□ना बजरंगी हो□ हो न? अफसरों-नेताओं का चरण-चुम□बन करते हो, तो भांड हो□ हो न? चलो, मान लयिा कि तुम सजग पत्रकार हो□ तो फरि यह बताओ कि मुख□तार अंसारी के पछिले महीनों जब तबयित खराब होने केदावे पर लखनऊ भेजा गया था, तो उसकी असलयित क□या थी? उस पर तुमने कैन सी खबर लखिी? वह क□या वजह है कि□ कसमान घटना पर अलग-अलग झूठों वाले तथ□यों वाली रपिोर्टगि तुम कैसे लखि पाते हो□ क□या वजह है कि तुम□हारे जैसों की अधकिांश खबरें आखरिकार झूठी या बकवास साबति हो जाती हैं□

जो काम तुम□हारा काम है वह तुम करते नहीं, और जो काम तुम□हारा नहीं है वही काम तुम लपक-लपककर करते घूमा करते हो□ आज से दो-ढाई दशक पहले तकश्रमकि जगत की खबरें अक□सर और खूब छपा करती थीं, लेकनि अब उन□हें जगह नहीं मलि पाती है□ वजह तुम बताओ न कि आखरि ऐसा क□यों हो रहा है□ खबरें लखिते वक□त कहां घुस जाती है तुम□हारी श्रमकि-संवेदनशीलता?

तुम□हारा काम खबर लखिना है, लेकनि तुम मालकिों को तेल लगाने से ही फुरसत नहीं पाते हो न? जहां मालकि कमजोर हुआ, तो वहां सम□पादकों केलि□ धंधाबाजी करना शुरू कर देते हो न? फर्जी खबरें लखिने में तुम□हें महारत है□ आम आदमी की खबर को डस□टबनि पर फेंकते हो, जबकि कोई बड़ा-बाबू टाइप अफसर अगर पाद भी मारे तो उस पर बाकायदा कालदिास की तरह पाद-शाकुंतलम जैसा महाग्रंथ तकलखि मारोगे□ कुछ दनि पहले ही वरषि□ठ फोटो-पत्रकार आरबी थापा ने पत्रकारों से चुनौती दी थी कि पत्रकारति में जुटे लोगों में अधकिांश लोगों को अगर राष□ट्र-गीत लखिने को कहा जा□ तो वे बगलें झांकना शुरू कर देंगे□

तो गुजारशि है तुमसे मेरे दोस□त□ अभी भी सम□भल जाओ□ दल□लागरिी बंद करो□ कलम उठाओ, और पैनी खबरें लखिने की कोशशि करो□

हालांकि मुझे पता है कि यह कर पाना तुम□हारे वश की बात नहीं रही है अब□ (□□□□□:)

□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□:-

□□□□□□□-□□□□□